

**Q. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष का क्या अर्थ है और उनका क्या महत्त्व है?**

**Ans.** सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन का एक प्रमुख संप्रदाय है, जिसे कपिल मुनि द्वारा प्रतिपादित किया गया माना जाता है। इस दर्शन में प्रकृति और पुरुष को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

1. **प्रकृति (Prakriti)** : प्रकृति को अदृश्य, अचेतन और अविनाशी तत्त्व माना जाता है, जो संपूर्ण भौतिक सृष्टि का मूल स्रोत है। यह तीन गुणों— सत्व, रजस, और तमस— से मिलकर बनी होती है। प्रकृति से ही समस्त जगत का निर्माण होता है, जिसमें भौतिक वस्तुएँ जीव और मानसिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। प्रकृति में परिवर्तनशीलता और विकास की प्रवृत्ति होती है।

2. **पुरुष (Purusha)** : पुरुष को चेतन, अविनाशी और अपरिवर्तनीय तत्त्व माना जाता है। यह आत्मा का प्रतीक है, जो साक्षी के रूप में स्थित रहता है। पुरुष का स्वभाव शुद्ध चेतना और अवलोकन करना है, जो किसी भी प्रकार के भौतिक बंधन से मुक्त रहता है। पुरुष और प्रकृति का संयोग सृष्टि की उत्पत्ति का कारण बनता है, लेकिन पुरुष स्वयं सृष्टि के किसी भी प्रकार के कार्य में संलग्न नहीं होता।

**महत्त्व** : प्रकृति और पुरुष की अवधारणा सांख्य दर्शन का मूलभूत सिद्धांत है। प्रकृति से भौतिक और मानसिक जगत की उत्पत्ति होती है, जबकि पुरुष के साथ संयोग से यह सक्रिय होता है। पुरुष की चेतना के कारण ही जीवों में जीवन और चेतना आती है। प्रकृति और पुरुष के इस द्वैतवादी सिद्धांत के माध्यम से सांख्य दर्शन सृष्टि और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास करता है।

### वेदांत दर्शन में मोक्ष

**Ans.** वेदांत दर्शन में मोक्ष का अर्थ है जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति और आत्मा का ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करना। मोक्ष को आत्मा की शुद्ध, अविनाशी और अनंत अवस्था के रूप में माना जाता है, जहाँ आत्मा सभी बंधनों और दुखों से मुक्त होती है और शाश्वत शांति और आनंद का अनुभव करती है।

**मोक्ष प्राप्ति के उपाय :**

1. **ज्ञान योग** : वेदांत दर्शन में ज्ञान योग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आत्मा और ब्रह्म के संबंध को समझना और आत्म-ज्ञान प्राप्त करना मोक्ष की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। उपनिषदों और वेदांत ग्रंथों के अध्ययन और चिंतन से यह ज्ञान प्राप्त होता है।
2. **भक्ति योग** : भक्ति योग के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव रखते हुए मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर की उपासना, ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से आत्मा की शुद्धि होती है और ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव होता है।
3. **कर्म योग** : कर्म योग के माध्यम से निःस्वार्थ कर्म करना और कर्मों के फलों का त्याग करना मोक्ष की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। इस मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता है और ईश्वर को समर्पित करता है।
4. **ध्यान और समाधि** : ध्यान और समाधि के माध्यम से आत्मा की शुद्धि और स्थिरता प्राप्त होती है। ध्यान के माध्यम से मन की शांति और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रगति होती है।

इन उपायों का पालन करके वेदांत दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मोक्ष की प्राप्ति से आत्मा ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करती है और सभी बंधनों और दुखों से मुक्त होकर शाश्वत शांति और आनंद प्राप्त करती है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग  
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय  
बारा चकिया, पूर्वी चम्पारण  
मो०-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com